भूदान आन्दोलन
(BHOODAN MOVEMENT)

भारतीय संस्कृति में दान व दया का अपना विशेष महत्त्व है। दान का अर्थ है अपने पास जो है उसमें से कुछ भाग उनके लिए स्वेच्छा एवं निःस्वार्थ भावना से दे देना जिनके पास उसका अभाव है। परमार्थ की भावना दान में निहित है। संसार के सभी व्यक्ति सुखी हों, जो सुख हमें प्राप्त है वह सबको प्राप्त हो। दान द्वारा इसी का प्रयत्न किया जाता है। दान में 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का भाव है। विश्व शान्ति तभी सम्भव है जब विश्व के निवासी सन्तुष्ट हों और जब तक प्राणियों में सुखों का समत्व नहीं होगा तब तक सन्तोष सम्भव नहीं। सुख का समान वितरण अथवा सुख के असमान वितरण का यथासम्भव निराकरण दान द्वारा सम्भावित है। भूदान आन्दोलन इन्हीं भावनाओं पर आधारित है। गाँधी के साथी श्री विनोबा भावे ने इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया है। समाजवादी समाज की स्थापना हेतु यह आन्दोलन भी भारत में प्रारम्भ किया गया है। इस आन्दोलन का लक्ष्य भी ग्रामीण समस्याओं का निराकरण करना है। यह आन्दोलन विशेष रूप से भूमिहीन कृषकों की दशा सुधारने से सम्बन्धित है।

भूदान का अर्थ—श्री जयप्रकाश नारायण ने लिखा है : "भूदान आन्दोलन केवल भूमि संग्रह और भूमि वितरण मात्र नहीं है। यह तो विशाल सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक क्रान्ति की दशा में प्रथम पग है।"[1] भूदान का संक्षेप में हम यही अर्थ कर सकते हैं कि जो व्यक्ति भूमिहीन दरिद्र हैं; जो लोग खेती करना जानते हैं, खेती करना चाहते हैं किन्तु जिनके पास खेती करने के स्वतन्त्र साधन नहीं, उनके लिए भूमिदान करना भूदान यज्ञ है। यह भूमिदान भूमि पर से व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त करने के लिए होगा। वायु, जल, प्रकाश पर जैसे किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं, उसी प्रकार भूमि भी ईश्वर की है। इस पर भी किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं रहना चाहिए। इस विचार को सामने रखकर दान देने वाला भूमि अर्पित

---

1 "Bhoodan is not a programme of merely collecting and distributing lands. It is rather the first step towards a total revolution—social, political and economic." J. P. Narain : *A Picture of Sarvodaya Social Order*, p. 1.

Scanned with CamScanner

करेगा जिससे कि गाँव की पूरी भूमि गाँव की ही हो जाय। भूमि का ग्रामीणीकरण ही भूदान आन्दोलन का प्रमुख आधार है।

वास्तव में, विश्व की, विशेषतः भारत की विकट सम्पत्ति-विषमता की जड़ आधुनिक अस्वाभाविक और विकारपूर्ण भूमि व्यवस्था है। आज भूमिहीन दरिद्र भूमि पाने को व्याकुल हो उठे हैं। सरकारी योजनाओं और दान संस्थाओं के द्वारा भूमिहीनों को चरखा तथा अन्य गृह-शिल्प देकर बहलाने का प्रयत्न किया जाता है। किन्तु किसान चरखा आदि को हृदय से स्वीकार नहीं करते। उन्हें खेती के लिए भूमि चाहिए। अतः भूमि समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान के द्वारा भारत में सामाजिक और आर्थिक समता स्थापित करने का प्रयास ही 'भूदान आन्दोलन' है। श्री आर० पी० मसानी के शब्दों में : "भूदान, सामाजिक रूढ़ियों के निराकरण के लिए दाता, प्राप्तकर्ता तथा सकल समाज का आध्यात्मिक परिवर्तन है। इसकी कल्पना मौलिक है, लक्ष्य क्रान्तिकारी है और प्रणाली अहिंसक, शान्तिपूर्ण किन्तु शक्तिशाली है। लोगों की मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा समाज के नव-निर्माण के इतिहास में यह सर्वाधिक शान्तिपूर्ण क्रान्ति है।"[1]

भूदान का जन्म

सन् 1951 में आचार्य विनोबा भावे अपनी तेलंगाना पद-यात्रा पर थे। 18 अप्रैल, 1951 को वे नलगुण्डा जिले के पोचमपल्ली ग्राम में आये। वहाँ तीन हजार की आबादी में दो हजार किसान भूमिहीन थे। कम्युनिस्टों ने ग्राम पर एक प्रकार से आधिपत्य जमा रखा था। किसानों से बातें करने पर विनोबाजी को पता लगा कि गाँव के लोगों को 80 एकड़ भूमि चाहिए जिससे सब लोग स्वतन्त्र भूमिधर बनकर खेती कर सकें। विनोबाजी ने यह बात जमींदारों के सामने रखी। एक जमींदार श्री रामचन्द्र रेड्डी ने अपनी 100 एकड़ जमीन देने का प्रस्ताव किया। सायंकाल प्रार्थना सभा में यह सूचना दी गयी। उसी दिन विनोबाजी के मन ने कहा कि यदि एक गाँव में 80 एकड़ भूमि माँगने से 100 एकड़ मिल सकती है तो निश्चय ही इस प्रकार भूमि माँगने से भूमिहीनों को मैं जमीन देने की व्यवस्था कर सकूँगा। यहीं से भूदान आन्दोलन का जन्म हुआ।

उसी दिन से आचार्य विनोबा अपने अनेक साथियों और अनुयायियों सहित इस कार्य में रत हैं। भारत के कोने-कोने में पैदल जाकर यह महाप्राण काफी भूमि माँग रहा है। उसका लक्ष्य है 5 करोड़ एकड़ भूमि प्राप्त करना। निश्चय ही वह दिन महान् होगा जब 5 करोड़ एकड़ भूमि विनोबाजी स्वयं देश के भूमिहीनों में वितरित करके सबको भूमिधर बना देंगे।

भूदान आन्दोलन के उद्देश्य

विनोबाजी ने लिखा है, "भूदान का कार्य वर्तमान समाज-व्यवस्था को समूल

---

1 R. P. Masani : *The Five Gifts*, p. 17

परिवर्तित करना है।"[1] भूदान केवल एकांगी आन्दोलन नहीं है, अपितु बहुउद्देशीय क्रान्ति है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(i) **साम्ययोग**--समाज का ही सब कुछ मानकर चलना साम्ययोग है। भूमिहीनों को समान स्तर पर स्वतन्त्र रूप से खेती करने का अवसर देने का प्रयत्न भूदान है। समस्त समाज में 'साम्य' (समानता) का प्रयत्न ही साम्ययोग है। सारी भूमि ग्राम की, समाज की है। उत्पादन के लिए सामर्थ्य के अनुसार श्रम करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। उत्पादन के लिए समान अधिकार होना चाहिए। भूदान के द्वारा अधिक भूमि वालों से लेकर भूमिहीनों में बाँटना साम्य की स्थापना करना है।

(ii) **शासनमुक्त समाज**—राज्यसत्ता से व्यक्ति को स्वतन्त्र करके अपनी भूमि से अपना पालन करने का प्रयास भूदान का दूसरा लक्ष्य है। व्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक खेती करें। ग्राम देश की इकाई के रूप में अपना प्रबन्ध स्वयं करें। दूसरों के निर्णय उस पर दबाव न डाल सकें, इस दिशा में भूदान कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं। प्रत्येक कार्य का समान फल, सत्ता का ग्राम-ग्राम में विकेन्द्रीकरण, प्रत्येक का भूमि एवं सम्पत्ति पर समान अधिकार, भूदान आन्दोलन का लक्ष्य है। इसकी पूर्ति पर ही एक अनुशासित शासनमुक्त समाज की स्थापना हो सकेगी।

(iii) **विश्वशान्ति**—आज संसार शान्ति की माँग कर रहा है। जन-जन में असन्तोष तथा भय व्याप्त है। ऐटम, हाइड्रोजन तथा अन्य चमत्कारी आयुधों के आविष्कर्ता भी घबरा रहे हैं। ऐसी अवस्था में भूदान आन्दोलन ही एकमात्र ऐसा पग है जो विश्व के एक-एक मानव को संघर्षरहित कल्पना देकर संसार में साम्य की स्थापना का मन्त्र सुना रहा है।

भूदान में सम्पत्तिदान, श्रमदान आदि का सहयोग है। ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, अमीर-गरीब को एक ही धरातल पर खड़ा करके सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण की बात सोचने की प्रेरणा देना भूदान आन्दोलन का उद्देश्य है।

(iv) **जनशक्ति संचयन**—आज विश्व में संघर्ष व्याप्त है। वर्ग संघर्ष एक प्राकृतिक अनिवार्यता माना जा रहा है। व्यक्ति का मन कहता है कि संघर्ष मनुष्य का स्वभाव नहीं किन्तु परिस्थिति कहती है कि बिना संघर्ष के जीवन अवरुद्ध है। राष्ट्रीयता और अन्तरराष्ट्रीयता भी विचार के विषय बन रहे हैं। ऐसी अवस्था में हर व्यक्ति को एक ही भाव से सोचने का अवसर नहीं। यह काम जनशक्ति से होगा कानून से नहीं। लोगों का हृदय परिवर्तन करके ग्रामराज्य की स्थापना का प्रयत्न करना भूदान का लक्ष्य है। नवीन समाज रचना का आधार जनशक्ति है। जनशक्ति के द्वारा ही विकेन्द्रीकरण तथा विचार स्वातन्त्र्य सम्भव है।

---

1 "Our work consists in changing the present social order from the very root." Acharya Vinoba Bhave : *The Principles and Philosophy of the Bhoodan Yojna*, p. 1.

Scanned with CamScanner

(v) **शारीरिक श्रम का महत्त्व**—भूदान के द्वारा शारीरिक श्रम की महत्ता पर अधिक जोर दिया गया है। आर्थिक समता के लिए प्रत्येक काम की समान प्रतिष्ठा करनी होगी। नैतिकता के आधार पर सामाजिक समानता स्थापित करनी होगी। सामाजिक मर्यादा समान होनी चाहिए। श्रम और बुद्धि का समन्वय भूदान आन्दोलन की दिशा की ओर संकेत करता है। उद्योग उत्पादन तथा अन्य सामाजिक अवयवों में श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। देश का प्रधानमन्त्री भी श्रम करे और मजदूर भी। ब्राह्मण भी खेती करे और जुलाहा भी।

(vi) **गरीबी को समाप्त करना**—भूमिहीनों को भूमि देकर बेरोजगारी को मिटाकर प्रत्येक व्यक्ति को काम देने की व्यवस्था करना, जिससे कि वह स्वतन्त्र रूप से अपने तथा अपने परिवार के लिए जीवनोपयोगी सामग्री जुटा सके। इस प्रकार देश में गरीब और अमीर दोनों ही शब्दों का लोप हो जाय।

(vii) **राजनीतिक साम्य**—भूमि के मालिकों के हृदय में प्रेम-भाव उत्पन्न करके नैतिक वातावरण उत्पन्न करना। भूदान यज्ञ के द्वारा विभिन्न राजनीतिक दल परस्पर निकट आयेंगे और भूस्वामियों और भूमिहीनों के वर्ग विभाजन के आधार पर जो विद्वेष व्याप्त है, वह मिटेगा। परस्पर प्रेम, सद्भावना का बन्धन दृढ़ होगा। राजनीतिक भेद-भाव तथा पार्टीबाजी का अन्त होगा। इसके फलस्वरूप देश सभी ओर से शक्तिसम्पन्न होगा।

(viii) **यज्ञ, दान और तप**—यज्ञ, दान और तप के आधार पर ही भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है। इन्हीं तीनों के समन्वय से साम्ययोग की आधार-शिलावत उसी प्राचीन संस्कृति का पुनरुत्थान करके मानव समाज में परम धर्म के प्रति विश्वास जाग्रत करना, भूदान आन्दोलन का चरम लक्ष्य है।

इस प्रकार भूदान आन्दोलन ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में आमूल परिवर्तन करके वर्गहीन, जातिहीन एवं शोषण विहीन ग्राम राज्य स्थापित करने की दिशा में पहला पग है। श्री चारुचन्द्र भण्डारी के शब्दों में : "भूदान यज्ञ का उद्देश्य है भूमि के इस प्रकार ग्रामीणीकरण को आधार मानकर ग्राम-उद्योग प्रधान अहिंसक समाज की रचना करना।"

भूदान यज्ञ की प्रविधियां (Techniques of Bhoodan)

भूदान यज्ञ का कार्य तीन दृष्टियों से सम्पन्न किया जा सकता है :

(i) **दया**—दुःखी व्यक्ति को सहायता देना दया कहलाती है। भूदान यज्ञ का कार्य इस दृष्टि से दया का कार्य है। इसके द्वारा भूमिहीन गरीबों को शीघ्रातिशीघ्र कुछ भूमि देकर उनका कष्ट निवारण किया जाता है।

(ii) **नवीन समाज रचना**—भूदान यज्ञ की दूसरी दिशा है आधुनिक वैषम्य को मिटाकर नवीन समाज रचना की व्यवस्था करना। यह एक मौलिक सिद्धान्त

Scanned with CamScanner

है । विप्लव, हिंसक क्रान्ति शस्त्र तथा संघर्ष आदि के द्वारा सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित किया जाता रहा है। भूदान यज्ञ के कार्य के द्वारा शक्तिसम्पन्न लोगों का हृदय परिवर्तन करके एक नये समाज की स्थापना करने की कल्पना की गयी है।

(iii) **नैतिक उपायों का अवलम्बन**—जनसाधारण से भूदान के लिए सहयोग प्राप्त करने के लिए केवल नैतिक उपायों का सहारा लिया जाता है। आन्दोलन के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो, गरीबों को जीवित रहने के लिए साधनसम्पन्नता का आधार मिले। इसके लिए हिंसा का उपयोग व्यर्थ होगा। भूमिपति से जबर्दस्ती भूमि प्राप्त कर गरीबों में बाँट देना आत्मीयता पैदा नहीं कर सकेगा। हिंसा के बाद प्रतिहिंसा आवश्यक है। अहिंसा और केवल अहिंसा के द्वारा ही भूमिपतियों को लूटने का कार्यक्रम विनोबा ने अपनाया है। यह लूट प्रेम की लूट है। इसलिए सामाजिक समस्याओं के समाधान के क्षेत्र में भी अहिंसा का सहारा आवश्यक है। भूदान यज्ञ की तीसरी दिशा नैतिक अर्थात् अहिंसक उपायों का आलम्बन है।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि भूदान वह पगडण्डी है जिसके द्वारा हम सर्वोदय समाज व्यवस्था के उस शिखर पर पहुँचना चाहते हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र होगा, अनुशासित किन्तु शासनमुक्त होगा; निर्भर किन्तु संयमी होगा। पराक्रमशील तथा उद्यमी होगा और जहाँ समाज व्यक्ति-विकास में सहायक होगा तथा व्यक्ति समाज-विकास में सहयोगी होगा। यह निरन्तर चलता रहे तभी काल्पनिक स्वर्ग की प्राप्ति की आशा की जा सकती है। कुमारी पैट मैकमहान ने ठीक ही कहा है : "इस आन्दोलन को छोड़ देना चलती रेलगाड़ी में से कूदने के समान होगा।"

प्रश्न

Scanned with CamScanner